राज कॉमिक्स
मूल्य 15.00 संख्या 400
पागल कातिलों की टोली
मुफ्त ध्रुव का एक पोस्टर

पागल कातिलों की टोली

सुपर कमांडो ध्रुव

कथा एवं चित्र: अनुपम सिन्हा | सम्पादन: मनीषचन्द्र गुप्त

© RAJA POCKET BOOKS

कभी नहीं। यह सब काला धंधा करते हैं। जिसके लिए इनको कहीं से भी एक धेला तक नहीं मिल पाता है।
मैं अपने रिस्क पर इनको करोड़ों रुपयों का उधार देता हूं। पर ये लोग उसको मजाक समझते हैं।
धड़ाक
अगर आज मैंने दुर्जन को और समय दे दिया, तो कल मांटो भी और समय मांगेगा। परसों कोई और मांगेगा।
नहीं! दुर्जन को मेरे देनदारों के लिए एक उदाहरण सिद्ध होना चाहिए।
और चेतावनी भी।
हां, मुनीम! दुर्जन का वक्त खत्म हो चुका है। अब उसे भी खत्म हो जाना चाहिए।
और उसी रात - 'रूलेट कैसीनो' की तरफ जाने वाली सड़क पर, एक जोड़ी कदमों की आहट गूंज रही थी।
ठक
ठक
ठक
और गूंज रही थी- पागलपन से भरी एक आवाज।
दुर्जन गंदा आदमी है। मर जाएगा साला। मार डालूंगा उसे।
और अब इस हंगामे में, एक नई आवाज शामिल हो रही थी।
एक मोटर-साइकल की घड़घड़ाहट की आवाज।
ओ! ओ!! यह आदमी तो खुलेआम सड़क पर कार्बाइन लेकर घूम रहा है।
जाहिर है कि इसके इरादे नेक तो नहीं ही हैं।
घड़
घड़
घड़
घड़
अभी मैं इसका ढीला दिमाग, कस देता हूं।
क्यों, श्रीमान? इस कार्बाइन से किसका कत्ल करने जा रहे हो?
दुर्जन को मारूंगा! काट-काट कर मारूंगा।
हट! हट जा! दूर हट! रास्ता छोड़।

और अगले ही पल- बगैर किसी चेतावनी के, कार्बाइन की नाल, गोलियां उगलने लगी।
हे भगवान!
यह तो पागल लग रहा है।
पर ऐसे पागल के पास कार्बाइन कहां से आई?
बारिश की बूंदों की तरह बरसती, गोलियां ध्रुव को तो नहीं छू सकीं।
तड़तड़तड़तड़
लेकिन सड़क पर आते एक गैस-टैंकर के अगले टायर, गोलियों से नहीं बच सके।
फटाक
तड़तड़तड़तड़तड़
और टैंकर बेकाबू होकर, एक पेड़ से जा टकराया।
धड़ाक
अरे! इंजन आग पकड़ रहा है। और ड्राइवर शायद टक्कर से बेहोश हो गया है।
मुझे उसे बाहर निकालना होगा।

वर्ना इस टैंकर के साथ-साथ, यह भी खत्म हो जाएगा।
आग, टैंकर तक पहुंच चुकी है। अब टैंकर किसी भी क्षण फट सकता है।
अगर मुझे एक पल की भी देर हुई ...
LEYLAND
बड़ांऽऽम
...तो ड्राइवर और टैंकर के साथ-साथ मेरी राम कहानी भी खत्म...।
नहीं हुई।
ओफ! बाल-बाल बचा।
लेकिन... वह पागल किधर गया? गायब हो गया! पर वह गया कहां होगा?
वह बार-बार एक ही नाम ले रहा था। दुर्जन! और मैं इस शहर में एक ही दुर्जन को जानता हूं।
'रूलेट कैसीनो' का मालिक दुर्जन!
वह पागल जरूर वहीं पर गया होगा।

'रूलेट कैसीनो' में रात, रोज की तरह जवान हो रही थी।
शो करो।
कलर है।
मेरा दांव, सात पर।
कि तभी-
दुर्जन कहां है?
गंदा आदमी किधर है?
तड़ाक
ओ माई गॉड! यह तो चीरकर है! पर यह पागलों की सी हरकतें क्यों कर रहा है?
इसको जरूर फाईनेंसर ने भेजा है! मेरी जान लेने के लिए।
घबराइए मत, दुर्जन बॉस!
हम अभी इसको लाश में बदलकर, वापस फाईनेंसर के पास भेज देते हैं।
चीरकर ने अपने और दुर्जन के बीच पड़ने वाले, शीशे को एक ही वार में, चूर-चूर कर दिया।
और उसी पल - दुर्जन के अंगरक्षकों ने उसको पकड़ लिया।

लेकिन अंगरक्षकों को चीरकर के शरीर में दौड़ रही पागल शक्ति का अंदाजा नहीं था। एक हल्के से झटके से ही दो भारी शरीर हवा में उछल गए।
और जमीन पर गिरने से पहले ही, दोनों के शरीर का खून, जमीन पर आ गिरा।
तड़
तड़तड़तड़
चीरकर, दुर्जन की ओर घूमा।
दुर्जन भय से जड़ हो गया था।
वैसे भी, वह बचकर भाग नहीं सकता था।
एक पागल से बचकर भाग पाना, बहुत मुश्किल होता है।
धाड़
और उससे, अपनी जान बचा पाना असंभव!
कचाक
धमाक

कार्बाइन की नाल, अधमरे दुर्जन की तरफ उठी। ट्रिगर धीरे-धीरे दबने लगा।
हा हा हा हा
हा हा हा हा
गोलियां, नाल से निकलीं।
लेकिन तब तक नाल का रुख, ऊपर की तरफ हो चुका था।
इस हमले से बौखला कर चीरकर तेजी से घूमा।
कार्बाइन का निशाना, इसबार ध्रुव का शरीर था।
तड़ाक
YATI
और हवा में उड़ता हुआ, ध्रुव का शरीर, दूर जा गिरा।
पर ध्रुव का बदन फिर हवा में तैर चुका था।
कार्बाइन की गोलियों से देर तक बच पाना मुश्किल है।
तड़तड़तड़
देर-सबेर कोई न कोई गोली, बदन को छेद ही देगी।
इसलिए कार्बाइन को इस के हाथ से अलग करना होगा। और यह काम करेगी ताश की यह गड्डी।

और एक फुरफुराहट के साथ दर्जनों ताश के पत्ते, चीरकर के मुंह की तरफ लपके।
और इससे पहले कि चीरकर संभल पाता-
कार्बाइन उसके हाथ से छिटककर दूर जा गिरी।
और साथ ही साथ, ध्रुव का एक भीषण मुक्का चीरकर के जबड़े से आ टकराया।
परंतु पागलों को दर्द का एहसास नहीं होता है-
इस बात का पता, ध्रुव को तुरंत ही चल गया।
धाड़
आ गा ह!
अगले ही पल- ध्रुव की छाती पर, चीरकर के वहशी हाथ आ चिपके। ध्रुव को मांस, अपनी हड्डियों से अलग होता महसूस हुआ।

अपनी लाख कोशिशों के बावजूद भी, ध्रुव पागल के हाथों को अपने शरीर से अलग नहीं कर पा रहा था।
लोहे सी सख्त उंगलियां, ध्रुव का मांस फाड़कर अंदर घुसने को बेताब हो रही थीं।
बेचैनी में ध्रुव ने अपने हाथ को लहराया।
और चीरकर द्वारा तोड़े गए, कांच का एक टुकड़ा, उसके हाथ में आ गया।
ध्रुव को बचाव का एक रास्ता मिल गया था।
उसका हाथ तेजी से घूमा। -
ओऽऽऽ
और कांच की तेज धार ने चीरकर की कलाई की नसों को काट दिया।
खचाक
कटी नसों से खून भलभलाकर नीचे गिरने लगा।
चीरकर के हाथ अपने आप, ध्रुव की छाती से हट गए।
और ध्रुव के जबर्दस्त वारों ...
धाड़
...और नसों से निकलते खून के बीच, चीरकर का दिमाग, धीरे-धीरे अंधेरे में डूबने लगा।
कुछ ही पलों में- चीरकर का शरीर, लहराकर जमीन पर आ गिरा।
अब सबसे पहला काम, इसकी कलाई से बहते खून को रोकना है।
और फिर अस्पताल और पुलिस-स्टेशन को फोन करना।

और फिर - पुलिस स्टेशन पर -
आर यू श्योर, डॉ. शास्त्री?
हां, हां, ध्रुव! यह आदमी एकदम नीम पागल है। आप लोगों ने मुझे तुरंत बुला कर बहुत अच्छा किया।
पुलिस-फोर्स का 'मनोचिकित्सक सलाहकार' होने के नाते मेरी राय है, कि इसको जल्दी से जल्दी मेरे 'मेंटल हॉस्पिटल' में दाखिल करा दिया जाए!
वर्ना इसकी हालत और बिगड़ सकती है।
ओह! ऐसी हालत में तो इसपर केस तक नहीं चलाया जा सकता!
यानि.. यानि दो-दो हत्याएं करने के बाद भी, यह साफ बच निकलेगा?
दो नहीं, तीन, ध्रुव! अभी-अभी खबर आई है कि घायल दुर्जन ने भी, अस्पताल में दम तोड़ दिया है।
पर कानून के मुताबिक पागल की सजा यही है, कि उसको पागलखाने में बंद कर दिया जाए।
ओह! तब तो भगवान से मेरी यही प्रार्थना है, कि ऐसी घटना दोबारा न घटे!
पर यह तो सिर्फ शुरुआत थी।
फाईनेंसर की लिस्ट में अभी कुछ और नाम बाकी थे।
और उनमें पहला नाम था -
मांटो खान!
कल की ब्राउन शुगर की सेल के पैसे आ गए हैं। लेकिन..
लेकिन क्या, पार्टनर?
अभी भी हमारे पास इतनी रकम नहीं हो पाई है, कि हम फाईनेंसर का कर्ज चुका सकें।
और आज मियाद का आखिरी दिन है।
मांटो खान पैसे वापस करने का दिन खुद तय करता है!

ये बोलने से पहले आज का अखबार पढ़ लो।
यह तो तुमको पता ही होगा, कि दुर्जन भी, फाईनेंसर का कर्जदार था।
क जागरण
कैसीनो मालिक दुर्जन की बर्बर हत्या
पागल कातिल ध्रुव ने पकड़ा
ओ रब्बा! तब तो उसका अगला निशाना मुझपर ही लगेगा।
मेरे बॉडीगार्डों की संख्या, डबल कर दो, पार्टनर!
फाईनेंसर के पागल कातिलों के लिए, स्पेशल बॉडीगार्डों का इंतजाम करना पड़ेगा
तुम घबराओ मत! मैं कुछ चक्कर चलाता हूं।
ध्रुव के लिए भी, यह केस अभी खत्म नहीं हुआ था।
BAR
इस सवाल का जवाब मुझे यहां से मिल सकता है। और वह जवाब मुझे इस केस की जड़ तक पहुंचा सकता है।
ध्रुव के भीतर पैर रखते ही, पूरी बार में सन्नाटा छा गया।

देखते ही देखते, पूरी बार खाली हो गई।
ओह! धंधे के टाइम, अपनी मनहूस सूरत लेकर यहां क्यों आए हो?
तुम जैसे लोगों के लिए तो मैं पैदायशी मनहूस हूं, बिज्जू!
तुम्हारी बार में शहर के सभी शातिर गुंडे आते हैं।
इसीलिए तुमको शहर में हो रही हर गलत गतिविधि की जानकारी रहती है।
मुझे सिर्फ एक सवाल का जवाब चाहिए। इस शहर में अवैध कार्बाइनों का स्टाक कौन लाया है?
और वे किस को बेची गई हैं?
मुझे नहीं मालूम! और अब तुम अपने-आप बाहर जाते हो, या मैं तुमको उठाकर फेंक दूं!
बिज्जू ने ध्रुव की गर्दन पकड़ ली।
और वह सचमुच, ध्रुव को उठाने वाला ही था...
...कि तभी उसको अपना शरीर ही हवा में उड़ता महसूस हुआ।
फिर वह किसी भारी चीज से टकराया।
छनाक
और उसके ऊपर कुछ भारी चीजें गिरने लगीं।
कुछ समझ पाने से पहले ही उसका शरीर कई तरह की शराबों में लथपथ हो चुका था।
तड़ छन
कड़ाक
छनाक

अब, बिज्जू, अगर तुम्हारे शरीर पर गलती से एक जलती तीली गिर जाए तो...
रु..रुको! म-मैं तो मजाक कर रहा था! बताता हूं! बता रहा हूं!
वे कार्बाइनें, चीरकर लेकर आया था।
...और मैं एक बात और भी जानता हूं!...
चीरकर सिर्फ एक हफ्ता पहले, मेरे बार में शराब पीने आया था, ...
... और उस वक्त वह पागल नहीं था!
ध्रुव के लिए छानबीन का एक रास्ता बंद हो गया था, तो दूसरा खुल गया था।
चीरकर एकाएक पागल हो गया था! पर कैसे?
शायद डॉ॰ शास्त्री मुझे इसका कारण बता सकें।
डॉ॰ शास्त्री खुद इस सवाल का जवाब ढूंढ़ रहे थे।
एकाएक पागल हो जाना कोई अनहोनी बात नहीं है, ध्रुव।
कई बार मानसिक आघात लगने से लोग पागल हो जाते हैं।
मेरे ख्याल से, दुर्जन ने चीरकर को कोई ऐसा धोखा दिया था, जिस से कि चीरकर अपना मानसिक संतुलन खो बैठा।
और उसी पागलपन की हालत में इसने दुर्जन का खून कर दिया।
पर चीरकर की वह अमानवीय ताकत?
पागलों में अक्सर, दीवानेपन की वजह से, ताकत कई गुना बढ़ जाती है।
वैसे मैं चीरकर का पूरा चेकअप, ध्यान से कर रहा हूं।
अगर मुझे कोई अनोखी बात पता चली, तो मैं तुमको तुरंत सूचित कर दूंगा।
थैंक्यू, डॉक्टर साहब। अब मैं चलता हूं।

डॉ॰ शास्त्री की थ्योरी मुझे ठीक लगती है। लेकिन फिर भी मुझे पूरा संतोष नहीं हो रहा है!
वह आ रहा है! ठीक से समझ गए हो न, कि क्या कहना है।
समझ गया! पर पहले पांच सौ रूपए तो दो!
साहब!...साहब!! ध्रुव साहब!
क्या बात है? कौन हो तुम?
मैं फड़के, साब! सुधीर फड़के। मैं यहां पर वार्ड-ब्वाय हूं, ध्रुव साब!
चीरकर को मैंने ही उसके सेल में बंद किया था।
पर सेल में बंद होते समय वह एक ही बात बार-बार दुहरा रहा था।...
...किसी मांटो खान का नाम बार-बार ले रहा था! बोल रहा था कि नशा बेचता है। गंदा आदमी है।
मैं उसकी हड्डियां चबाऊंगा! ऐसा बोल रहा था चीरकर!
नशा बेचता है! मांटो खान! मैं समझ गया!
थैंक्यू, फड़केजी! आपने मेरी बहुत मदद की है!
शाबास, फड़के! अब ध्रुव, मांटो खान को ढूंढ़ता हुआ, उस तक जरूर पहुंच जाएगा!
और ध्रुव के वहां पर रहते फाईनेंसर के पागल कातिल, मांटो का बाल भी बांका नहीं कर सकते!
मांटो खान के लिए स्पेशल बॉडीगार्ड का इंतजाम हो गया!
बाजियां हर तरफ से चली जा रही थीं।
आज का दिन बीत गया, फाईनेंसर! और मांटो खान का पैसा अबतक नहीं आया।
और न ही कोई खबर आई।
दुर्जन का अंजाम जानकर भी, उसके कान पर जूं तक नहीं रेंगी। यानि अभी भी हमारे कर्जदार कुछ नहीं सीखे।
इनको एक खुराक और देनी होगी। मांटो को खत्म कर दो!

अब की बार कनपटीमार का इस्तेमाल करो।
मांटो खान के लिए एक-एक पल काटना मुश्किल हो रहा था।
मुझे मालूम है कि वे पागल शैतान मुझे, इस गोदाम में भी ढूंढ लेंगे।
किस पागल शैतान से डर रहे हो, मांटो खान?
ध्रुव!
यह सब झूठ है! मेरे दुश्मनों की उड़ाई हुई खबर है।
तुम खुद देखलो। चारों तरफ, आटे की बोरियां हैं! मैं तो आटे का काम करता हूं।
हूं! यानि सारा माल तुमने पहले ही ठिकाने लगा दिया है!
तुम्हारा नशे का धंधा, शायद मंद चल रहा है।
चीरकर से तुम्हारा क्या संबंध है, मांटो?
पर तभी - अचानक दो हाथ, बिजली की तरह लहराए।
इसी वक्त - गोदाम के ठीक बाहर -
मांटो के बॉडीगार्ड गश्त लगा रहे थे।
तू इधर नजर रख, कोका।
मैं उधर देखता हूं।
लोहे सी सख्त उंगलियां बॉडीगार्डों की कनपटियों से टकराईं।

और बॉडीगार्डों के शरीर बेहोश होकर, जमीन पर आ गिरे।
एक वहशी आकृति ऊपर से, दोनों बेहोश व्यक्तियों पर कूदी। भारी बूटों का संपर्क दो खोपड़ियों से हुआ।
हा हा ही हा
खड़ाक
फ चा के
और एक भयानक आवाज के साथ दोनों सिरों के टुकड़े जमीन पर बिखर गए।
आवाज, गोदाम के अंदर तक भी पहुंची।
यह कैसी आवाज है?
जरूर कोई पागल कातिल यहां तक आ पहुंचा है!
खड़ाक
इसको जरूर फाइनेंसर ने मुझे मारने को भेजा है!
कौन फाईनेंसर?
चीरकर भी उसी का आदमी था। मैंने और दुर्जन ने फाइनेंसर से कर्ज लिया है!
समय पर पैसा वापस न कर पाने की सजा देने के लिए, उसने दुर्जन का खून करवा दिया।
अब मेरा भी वही हाल होगा।
अगर ऐसा है, तो इसके हाथों में भी कार्बाइन होगी। पहले उससे बचने का इंतजाम करना पड़ेगा।
धड़ड़
धड़
धड़
कनपटीमार की टक्करों से, धीरे-धीरे, दरवाजे के परखच्चे उड़ रहे थे।
और आखिरकार- दरवाजे ने जवाब दे दिया।
कड़ड़ड़

भौचक्के मांटो और ध्रुव ठीक सामने खड़े नजर आ रहे थे।
कनपटीमार की उंगली, कार्बाइन के ट्रिगर पर दब गई।
और एक धमाके के साथ, अलमारी के शीशे, और उसमें पड़ रहे प्रतिबिंबों के टुकड़े हो गए —
धमाक
ध्रुव ने दरवाजे के सामने अलमारी जो खड़ी कर दी थी।
अगले ही पल - कार्बाइन, कनपटीमार के हाथ से दूर जा गिरी।
अब मैं इस को भून कर रख दूंगा।
पर तभी - कनपटीमार के हाथों में दो तलवारें चमक उठीं।
हा हा हा।
काट डालूंगा। बोटी-बोटी करके काटूंगा।
मांटो। गोली मत चलाना।
मैं इसको जिंदा पकड़ना चाहता हूं।
आजा! आजा!! सबसे पहले मैं तेरी कनपटी काटूंगा।
पहली तलवार, ध्रुव के कानों को लगभग छूती हुई गुजरी।
सड़ाक
और दूसरी तलवार की धार ने उसके कुछ बाल हवा में उड़ा दिए।

इसलिए इन तलवारों का... आह!
कनपटीमार के हाथ मशीन की तरह चल रहे थे।
एक तेज धार ने, ध्रुव की कनपटी को काट दिया।
और दूसरे वार से बचने की कोशिश में, ध्रुव अपना संतुलन खो बैठा।
तड़ाक
और उसका सिर मेज के कोने से जा लड़ा।
कुछ सेकेंडों के लिए उसकी आंखों के आगे अंधेरा छा गया। और कनपटीमार को मांटो की तरफ ध्यान देने का मौका मिल गया।
नहीं, नहीं! रुक जाओ!
मांटो ने कांपते हाथों से रिवॉल्वर, कनपटीमार की तरफ तान दी।
पर कनपटीमार के हाथ, आटे की एक भारी बोरी को उठा चुके थे।
मांटो ने छः की छः गोलियां, कनपटीमार पर झोंक दीं।
धांय धांय धांय
धांय धांय धांय
पर कोई भी गोली बोरी के पार नहीं जा पाई।
कनपटीमार ने, बोरी को एक तरफ फेंक दिया।

और एक भीषण वार से मांटो का शरीर, दीवार में मक्खी की तरह चिपक गया!
आ आ
हे राम! इसने मेरी आंखों के सामने मांटो का कत्ल कर दिया।
अब तक मैं अपने वारों को इसे पागल समझ कर रोक रहा था।
पर अब नहीं!... यह तलवार को बड़े खतरनाक ढंग से लहरा रहा है। अब मुझे भी अपने लिए एक ढाल का इंतज़ाम करना पड़ेगा!
ध्रुव ने लपक कर आटे की एक बोरी को उठा लिया।
पर उसका इरादा, इस बोरी को सिर्फ ढाल की तरह इस्तेमाल करने का नहीं था।
बल्कि यह कनपटीमार को काबू में करने का एक हथियार भी था।
लहराती तलवार ने एक ही झटके में, बोरी के टाट को काट डाला।
अगले कुछ पलों में क्या हुआ, यह कनपटीमार नहीं समझ पाया।

और -
धाड़
कुछ समझ पाने से पहले ही -
कनपटीमार बेहोशी की दुनिया की सैर कर रहा था।
धड़ाक!
और फिर कुछ ही देर बाद -
क्या कह रहे हो, डॉक्टर वर्मा?
हां, इंस्पेक्टर! यह आदमी एकदम पागल है!
पर यह एक हफ्ता पहले ही तो जेल से छूटकर आया है। और तब तो यह बिल्कुल ठीक था।
पर अब नहीं है! आप इसको तुरंत डॉ. शास्त्री के अस्पताल में भिजवा दीजिए।
डॉ. शास्त्री अस्पताल में ही मौजूद थे।
डॉ. वर्मा का कहना ठीक था! यह पूरा पागल है!
एक और पागल कातिल!!
मैं अभी अपने टेस्ट पूरे नहीं कर पाया हूं।
पर मुझे यकीन है कि टेस्ट में, कोई न कोई ऐसी चीज जरूर मिलेगी, जो इनके अचानक पागल हो जाने पर रोशनी डाल सके।
पता चलते ही खबर कीजिएगा, डॉक्टर साहब!
यह तो मेरी ड्यूटी है, ध्रुव!

वापस लौटते समय ध्रुव के दिमाग में नई जानकारियां घूम रही थीं।
फाईनेंसर! यह एक नया नाम पता चला है। और उसके पास इन कातिलों को पागल कातिल बना सकने की क्षमता भी है!
पर जो कुछ भी हो, फाईनेंसर है बहुत चालाक!
उसने अपने पीछे ऐसा कोई सबूत नहीं छोड़ा है, जिससे कि उसतक पहुंचा जा सके!
पर बकरे की मां कबतक, खैर मनाएगी!
फाईनेंसर कोई न कोई गलती तो करेगा ही!
और तब मैं उसको धर दबोचूंगा!
पर फाईनेंसर अपना जाल ध्रुव के लिए भी बिछा रहा था।
मांटोखान की कहानी खत्म कर दी गई है, फाईनेंसर!
पर ध्रुव एक बार फिर वहां पर आ पहुंचा था!
हुम्म! यानि ध्रुव मेरे रास्ते का कांटा बनने की तैयारी में है।
कहिए, तो ध्रुव का भी ऊपर का टिकट कटा दूं!
हमारी टोली का एक पागल कातिल अभी बचा हुआ है!
नहीं, मुनीम!
ध्रुव को खत्म करना, कोई आसान काम नहीं है! और उसको मारकर हमें फायदा भी नहीं होगा।
ध्रुव को मैं अपनी पागल कातिलों की टोली में शामिल करना चाहता हूं, मुनीम!
लेकिन वह सब बाद में!
अभी हमको चीरकर और कनपटीमार को, डॉ॰ शास्त्री के पागलखाने से आजाद कराना है!
तैयारी शुरू कर दो!
इस षड्यंत्र से अंजान ध्रुव, गहरे सोच-विचार में डूबा हुआ था।
और उसके चेहरे पर छाई संतुष्टि से साफ जाहिर था कि वह अपनी मंजिल के करीब है।
पर किस्मत उसको खुद ही फाईनेंसर तक ले जाने वाली थी।

ध्रुव, हियर!
ध्रुव, मैं डॉ॰ शास्त्री! कनपटीमार ने मुझे कुछ सनसनीखेज बातें बताई हैं!
तुम तुरंत यहां आ जाओ!
मैं अभी आता हूं, डॉ॰ साहब!
मुझको पता था, कि डॉ॰ शास्त्री ही मुझको फाईनेंसर तक पहुंचने का रास्ता दिखाएंगे!
ध्रुव को, अस्पताल पहुंचने में ज्यादा वक्त नहीं लगा।
अरे! आज गेट पर खड़े होने वाले दोनों पहरेदार गायब हैं!
ओह! ये रहे वे दोनों पहरेदार!
बेहोश!
ऊपर से एक रस्सी भी नीचे लटक रही है!
यानि दुश्मन मुझसे पहले यहां पर पहुंच चुका है।
ध्रुव का ख्याल सही था।
खुल गया ताला!
अब जल्दी से इन दोनों को बाहर निकालो!
बेकार की मेहनत क्यो कर रहे हो?

अभी एक मिनट बाद इनको फिर से अंदर बंद करना पड़ेगा।
सुपर कमांडो ध्रुव! तुम बिल्कुल सही वक्त पर आए हो!
पकड़ लो इसको!
अपने पीछे दरवाजा खुलने की चरमराहट सुनकर, ध्रुव घूमा।
और उसका शरीर कंपकंपाहट से भर गया।
तीन तरफ से, तीन पागल कातिल एकसाथ उसकी तरफ बढ़ रहे थे।
क्लीनिक
CLINIC
ओह! अब मुझे जल्दी से जल्दी इन मुसीबतों को ठिकाने लगाना होगा।
पर कैसे?
इन सनकियों पर तो मेरे वारों का कोई असर ही नहीं हो रहा है।

और ये मुझको खिलौने की तरह उठा-उठाकर फेंक रहे हैं।
धड़ाक
हा हा हाहा!
हवा में उड़ता हुआ, ध्रुव का शरीर...
...डॉ॰ शास्त्री के क्लीनिक के अंदर आ गिरा।
आऊ!
धड़ाक
इस वक्त अगर मेरी कोई हड्डी टूट गई, तो फिर मेरी गर्दन को टूटने से कोई भी बचा नहीं पाएगा।
यह तो डॉ॰ शास्त्री का क्लीनिक लग रहा है, जहां पर वे पागलों का इलाज करते हैं!
यानि मुझे भी यहीं पर पागलों का दिमाग कसना पड़ेगा!
पर एक-एक कर के!
क्लीनिक के अंदर सबसे पहले घुसने वाला चीरकर था।
और उसके अंदर घुसते ही...
...ध्रुव ने एक झटके से दरवाजा बंद कर दिया।
बाकी लोग बाहर ही रह गए।
और चीरकर भी अपने-आप को अकेला पा कर भ्रम में पड़ गया।
धमाक

और इससे पहले, कि वह इस भ्रम से उबर पाता -
धड़ाक
..ध्रुव के एक जोरदार वार ने..
..उसको 'इलेक्ट्रिक चेयर' में फेंक दिया, जिस पर डॉ० शास्त्री अपने मरीज़ों का इलाज, बिजली के झटकों से करते थे।
कट
खट
चीरकर के कुर्सी पर गिरते ही, ऑटोमेटिक शिकंजों ने उसके हाथों और पैरों को कस लिया।
अब ध्रुव के पास, बटन को ढूंढकर दबाने का भरपूर समय था।
बटन के दबते ही, एक जानवरों जैसी चीख के साथ, चीरकर का दिमाग, अंधकार में डूबने लगा। ध्रुव ने एक पागल कातिल को रास्ते से हटा दिया था। -
लेकिन अभी आराम करने का वक्त नहीं आ पाया था।
एक कड़केदार आवाज के साथ दरवाजा टूट गया।
कड़ड़ड़ड़
हे भगवान! अब तेरा ही सहारा है!
इस वक्त अगर
आसान हो जाता!

मगर फाईनेंसर ने अपना जाल बहुत सोच-समझ कर बिछाया है।
और इस जाल से बचकर निकल पाना, मुझे मुश्किल लग... आह!
टिंग
बाप रे! पागल के एक ही घूंसे में खोपड़ी, पंखे की तरह घूमने लगी है!
पर.. मेरी बांह में क्या गड़ रहा है?
यह तो भरे हुए इंजेक्शन हैं। डॉ॰ शास्त्री ने इनको शायद इलाज के लिए तैयार करके रखा है।
पर इनमें कौन सी दवाई भरी है?
खैर! इतना दिमाग लगाने की कोई जरूरत नहीं है! अभी खुद ही पता चल जाएगा!
कनपटीमार, ध्रुव को अपने भारी शरीर के नीचे दबा लेने के लिए आगे लपका।
लेकिन ध्रुव तब तक अपने स्थान से खिसक चुका था।
कनपटीमार, सिर्फ ध्रुव का हाथ दबा पाया। और साथ ही साथ इंजेक्शन भी!
तेज सुई, कनपटीमार के बाजू में जा धंसी।
पिस्टन पूरा दब गया।
और साथ ही साथ, इंजेक्शन में भरी, नींद की तेज दवाई का असर, तुरंत सामने आ गया।
खर्र खर्र खर्र्र्र!

यह सब होने में कुछ ही पलों का समय लगा।
और जब तक फाईनेंसर कुछ समझ पाता, ध्रुव उसकी तरफ लपक रहा था।
अगले ही पल - फाईनेंसर ने अपने आप को एक मजबूत शिकंजे में पाया।
और धातु की एक तेज और ठंडी धार, उसकी गर्दन पर आ टिकी।
अपने पालतू को रोको! वर्ना सांस की नली के दो टुकड़े कर दूंगा!
अर्क! रु..रुक जाओ, घरफाड़!
शाबास। अब इसको अपने पिंजरे में वापस आने का हुक्म दो।
और फिर मेरे सवालों के जवाब।
तुम्हारा खेल खत्म हो चुका है, फाईनेंसर!
लेकिन ध्रुव, अपने पीछे से बढ़ रहे खतरे से अंजान था।
ध्रुव को ऐसा लगा, मानो उसके सिर पर पूरी छत आ गिरी हो।
और फिर उसका दिमाग कुछ पलों के लिए सुन्न हो गया।
ताड़
जब उसकी आंखों के आगे, सितारे नाचने बंद हुए, तो उसने अपने-आप को एक मजबूत गिरफ्त में पाया।

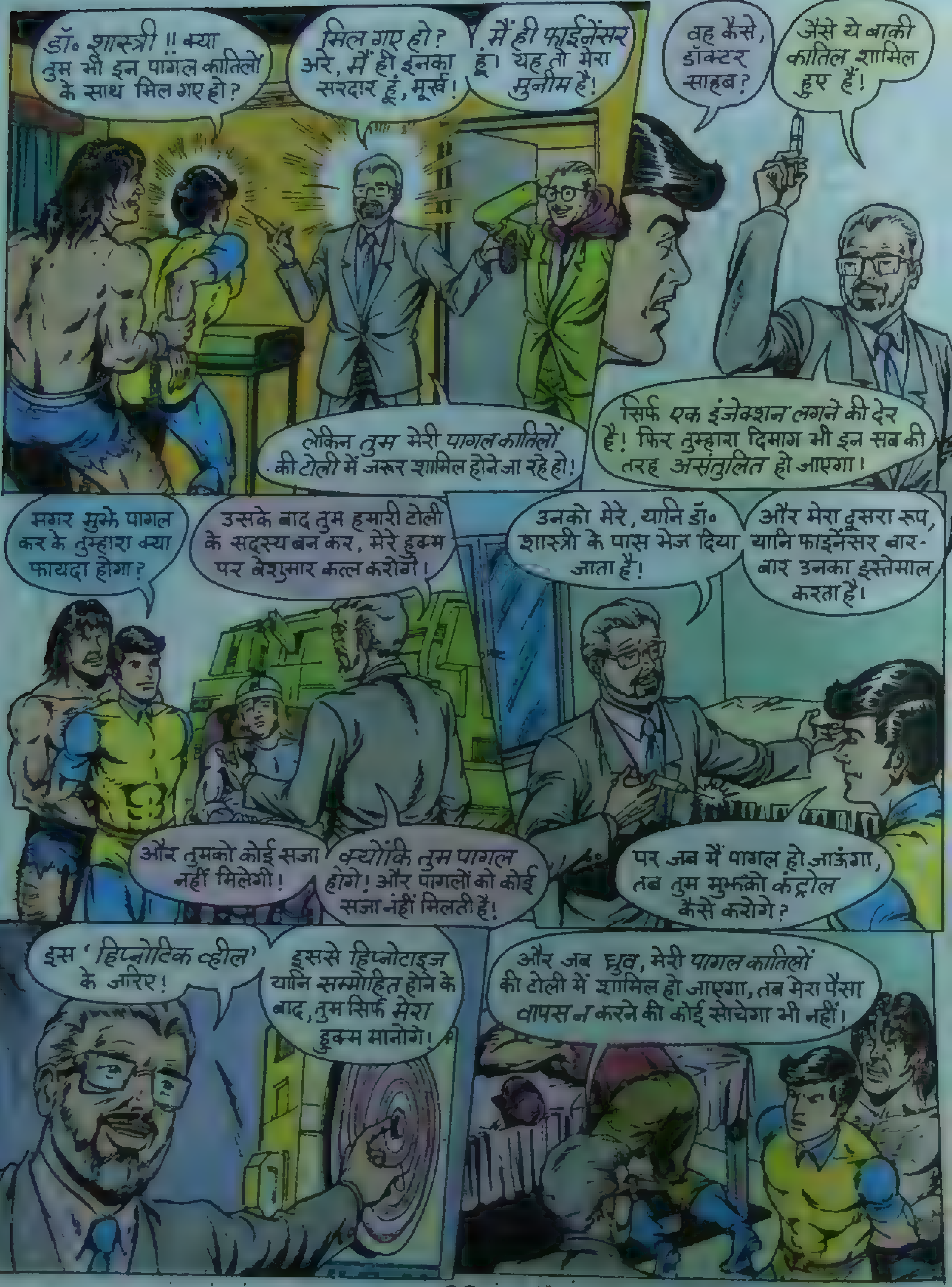
डॉ० शास्त्री !! क्या तुम भी इन पागल कातिलों के साथ मिल गए हो?
मिल गए हो? अरे, मैं ही इनका सरदार हूं, मूर्ख!
मैं ही फाईनेंसर हूं। यह तो मेरा मुनीम है!
लेकिन तुम मेरी पागल कातिलों की टोली में जरूर शामिल होने जा रहे हो!
वह कैसे, डॉक्टर साहब?
जैसे ये बाकी कातिल शामिल हुए हैं!
सिर्फ एक इंजेक्शन लगने की देर है! फिर तुम्हारा दिमाग भी इन सब की तरह असंतुलित हो जाएगा।
मगर मुझे पागल कर के तुम्हारा क्या फायदा होगा?
उसके बाद तुम हमारी टोली के सदस्य बन कर, मेरे हुक्म पर बेशुमार कत्ल करोगे।
और तुमको कोई सजा नहीं मिलेगी!
क्योंकि तुम पागल होगे! और पागलों को कोई सजा नहीं मिलती है!
उनको मेरे, यानि डॉ० शास्त्री के पास भेज दिया जाता है!
और मेरा दूसरा रूप, यानि फाईनेंसर बार-बार उनका इस्तेमाल करता है।
पर जब मैं पागल हो जाऊंगा, तब तुम मुझको कंट्रोल कैसे करोगे?
इस 'हिप्नोटिक व्हील' के जरिए!
इससे हिप्नोटाइज यानि सम्मोहित होने के बाद, तुम सिर्फ मेरा हुक्म मानोगे!
और जब ध्रुव, मेरी पागल कातिलों की टोली में शामिल हो जाएगा, तब मेरा पैसा वापस न करने की कोई सोचेगा भी नहीं।

मुझे तो लगता है, कि यह इंजेक्शन तुमने अपने-आप को लगा लिया है।...
... वर्ना तुम अपनी अच्छी-खासी डॉक्टरी छोड़कर, यह गलत काम कभी न करते।
ईयाऊ!
धड़ाक
शक तो मुझे, तुमपर पहले ही हो चुका था।...
क्योंकि पागलों को कंट्रोल करने का काम कोई मनोचिकित्सक ही कर सकता था!
और इस केस से संबंधित एकमात्र मनोचिकित्सक, तुम ही थे।
और अब तुमने मेरा रहा-सहा शक भी दूर कर दिया!
अब तुम यहां से ज़िंदा बचकर नहीं जा पाओगे!
धरफाड़ मेरी टोली का सबसे खतरनाक कातिल है! और इसका पहला शिकार तुम बनोगे!
धरफाड़, अटैक!
और धरफाड़ किसी पागल सांड की तरह, ध्रुव की तरफ लपका।

शास्त्री ठीक कह रहा है।
धरफाड़ पागलपन की भी सीमा पार कर चुका है।
इसीलिए यह अपने शरीर पर लगी किसी भी चोट को महसूस नहीं कर पा रहा है!
आऊ!
धाड़
अब मेरी ताकत भी जवाब दे रही है।
अब तो इस पार या उस पार वाला मामला है।
ध्रुव के बढ़े हाथ में, जमीन पर गिरा हुआ, 'सर्जिकल चाकू' आ लगा।
और ध्रुव ने उसको तेजी से लहराना शुरू कर दिया।
मैं इसको जान से मारना नहीं चाहता। क्योंकि यह अपनी हरकतों के लिए खुद जिम्मेदार नहीं है।
इसलिए मैं इस पर वही ट्रिक आजमाऊंगा, जो मैंने चीरकर पर, कैसीनो पर आजमाई थी।
मैं धरफाड़ के शरीर पर इतने सारे, छोटे-छोटे घाव लगा दूंगा, कि जल्दी खून निकलने से इसकी ताकत मुझसे पहले खत्म हो जाए।
और उसके बाद में फाईनेंसर की खबर...
आई!
खून की कमी से धरफाड़ की ताकत में कोई कमी नहीं आई थी।
तड़ाक
बल्कि शरीर से बहते खून की झलक ने उसके वहशीपन को और भड़का दिया था।
धमाक
एक धड़ाके के साथ, ध्रुव को अपने शरीर की सारी हड्डियां कड़कड़ाती महसूस हुईं।
उसकी आंखों के आगे अंधेरा छा गया।

घरफाड़ की उंगलियां, ध्रुव के बालों में आकर कस गईं।
ध्रुव को बालों के साथ-साथ अपनी खाल भी शरीर से अलग होती महसूस हुई।
आऊऊऊ! ईयायाया!
इस शिकंजे से छूट पाना मुश्किल लग रहा है! लगता है कि आज कोई ट्रिक काम नहीं आएगी।
क्या बच पाने का कोई रास्ता नहीं...
...एक रास्ता है।
आखिरी रास्ता!
क्लिक
ध्रुव की बढ़ी उंगलियां एक स्विच पर आ दबीं।--
--और क्लीनिक में एक घरघराहट गूंज उठी।
घरफाड़ की आंखें तुरंत घरघराहट के स्रोत की तरफ घूम गईं।
और यही गलती, उसकी आखिरी गलती साबित हुई।
घर्र्र्र
क्योंकि यह घरघराहट, 'हिप्नोटिक व्हील' के घूमने की घरघराहट थी।
आ... ..ह!
देखते ही देखते घरफाड़ की आंखों से वहशीपन गायब हो गया।
और उसकी आंखें फैलकर पथरा गईं।
घरफाड़, सम्मोहित हो चुका था।
अरे! अरे! यह क्या हो गया?
तू बच गया! कैसे बच गया? मैं तुझको पागल कर के ही छोडूंगा।
छोड़ो, फाईनेंसर! अभी तो यहां से भागने की सोचो।
हट!
तू बच नहीं पाएगा! तू मेरा पालतू बनेगा! मेरा पागल कातिल!
हा हा हा!
ओह! ओह!!
अपनी स्कीम को तबाह होते देख कर, शास्त्री का दिमाग भी सनक रहा है।

डॉ॰ शास्त्री के ज्यादा जोर लगाने पर, मुनीम ने अपनी पकड़, एकाएक ढीली कर दी।
और एक झटके से डॉ॰ शास्त्री अपना संतुलन खोकर जमीन पर आ गिरा।
ई य आ
इंजेक्शन वाला हाथ, उसके शरीर के नीचे आ दबा।
और जब डॉ॰ शास्त्री खड़ा हुआ, तो इंजेक्शन की सुई उसके पेट में धंसी हुई थी।
पिस्टन पूरा दबा हुआ था।
और शास्त्री के होंठों पर था, एक पागल का अट्टहास!
यह तो पागल हो गया।
अपना हथियार, यह अपने-आप पर ही चला बैठा। अब सिर्फ तुम बचे हो, मुनीम!
मुझे--मुझे माफ कर दो, ध्रुव जी! मैं तो सिर्फ मुनीम हूं।
इन पागलों के चक्कर में खामख्वाह फंस गया था।
यह फैसला मैं नहीं, अदालत करेगी, मुनीम!
फिलहाल तो तुम पुलिस को फोन करके बुलाओ!
तड़ाक
और फिर-
भगवान का न्याय भी अजीब है, ध्रुव!
वह हम मनुष्यों को हमेशा याद दिलाता रहता है, कि मौत से भी बदतर कुछ सजाएं हैं।
जैसे पागलपन!
ठीक कह रहे हो, इंस्पेक्टर!
इस जैसे पापी के लिए मौत की सजा, तो बहुत छोटी सजा होती।
भगवान ने इसको खुद ही उम्रकैद की सजा दे दी है।
समाप्त